ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

''वाल्मीकि रामायण में सांख्य दर्शन परक भूमि''

डा0 सुगन्धा जैन

संस्कृत रीडर , तीर्थंकर आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन, सम्बद्ध तीर्थांकर महावीर यूनीवर्स्टी मुरादाबाद – (उ0प्र0)

आदिकाव्य 'रामायण' वैदिक वाङ्मय रूपी महोदधि से निःसृत अनेक दार्शनिक विचारधाराओं से परिवृत विभिन्न विधाओं एवं कलाओं से अलंकृत एक आदर्श ग्रन्थ है। जिसमें धर्म दर्शन का मिला जुला रूप दर्शनीय है। यथा–प्रातः कालीन रवि की सप्तरंगी किरणें हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर प्रथमतः पड़कर उसे सप्तरंगी किरीट पहना देती हैं उसी प्रकार दर्शन की नवरंगी अरूणिमा ने सर्वप्रथम आदिकाव्य में प्रतिबिम्बित हो उसकी पवित्र श्वेतकीर्ति को रंगीन हास से युक्त कर दिया है। षड्दर्शनों के मुक्ताहार को धारण करने वाले रामायण ग्रन्थ में सांख्य के मौक्तिक–तत्व अत्याधिक ज्योतित हो उठे है। यही नहीं सांख्य की पृष्ठ भूमि को प्राप्त कर रामायण की अध्यात्मिकता भी जगमगा उठी है। रामायण में व्याप्त राम और सीता के जीवन–दर्शन की गुप्त–गुहा में प्रवेश किया जाए तो उस पर सांख्य की स्पष्ट छाप परिलक्षित होती है। राम पुरूषोत्तम नारायण है और सीता जगत् जननी प्रकृति स्वरूपा 'नारायणी' है।[1]

प्रकृति में संक्षोभ (हलचल) से सर्वप्रथम 'सत्', 'रज', 'तम' तीनो गुण न्यूनाधिक होने लगते हैं अतः जब 'सत्त्व' गुण प्रधान होता है 'तब' 'महत्तत्त्व' का उद्भव होता है। महत्त–तत्त्व में 'रजोगुण' की प्रधानता से अहंकार की तथा उसमें 'तमोगुण' की प्रधानता से 'पंचत्तन्मात्राओं' की उत्पत्ति होती है। तमो गुण की अधिकता से सूक्ष्मतन्मात्राओं से पांच 'स्थूल–भूतों' का उद्भव होता है। इसके पश्चात इन पांच स्थूल–भूतों के सम्मिलन और गुणत्रय के न्यूनाधिक्य के परिणामस्वरूप विभिन्न प्रकार की जड़–जड़्गम सृष्टि का निर्माण होता है।

अध्यात्म रामायण में सांख्य के 25 तत्त्वों का व्याख्यान स्पष्ट रूप से किया गया है। 'अध्यात्म–रामायण' के अनुसार 'पुरूष' (राम) द्वारा क्षुभित होने पर इस 'शक्ति' 'सीता' से प्रथमतः महत्तत्त्व उत्पन्न होता है और महत्तत्त्व से अहंकार उत्पन्न होता है।

''त्त्वया संक्षोभ्यमाणा सा महत्तत्त्वं प्रसूयते ।

महत्तत्त्वादहङ्कारस्त्वया संचोदितादभूत।।[2]

अहंकार से सूक्ष्म तन्मात्राएँ, स्थूल–भूत, और ग्यारह इन्द्रियाँ उत्पन्न होती हैं। जिनके मिलने पर सूक्ष्म शरीर 'हिरण्यगर्भ' या सूत्रात्मा उत्पन्न होता है।[3]

www.ijahms.com

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

रामायण कार ने प्रसंगतः संकेत रूप में सांख्य–सम्मत् 25 तत्वों का वर्णन किया है उनके अनुसार राम सांख्य के 'पुरूष' तो सीता प्रकृति है। सीता को कवि ने माया, जगत् जननी, तथा नारायणी आदि नामों से भी पुकारा है। इन्हीं दोनों प्रकृति और पुरूष के संयोग से सृष्टि की उत्पत्ति होती है। सीता सदैव श्रीराम की सहधर्मिणी के रूप में उनके साथ उपस्थित रहती है छाया की भाँति हमेशा राम की अनुगमिनी है।

छायेवानुगता सदा [4]

सीता सांख्य की प्रकृति है जैसे प्रकृति पुरूष की कामना भोग अथवा दर्शन हेतु करती है तथा पुरूष के भावों को अनुगत करती है और जब उपभोग हेतु एक बार अपना दर्शन करा देती है तो पुनः उसके पास नहीं जाती इसी प्रकार सीता भी निरन्तर श्रीराम की ही कामना करती है और मनस्वी राम भी उनके गुणों में संयुक्त रहते हैं तथा निर्गुणी होकर भी गुणवान प्रतीत होने लगते है। सीता भी प्रकृतिवत् श्रीराम के अभिप्राय को स्वतः ही समझ जाती है तथा स्पष्ट रूप से बता भी देती थी औरश्रीराम के चाहने पर ही उनके साथ रही और जब श्रीराम ने सीता के प्रति अपने मोह का त्याग कर दिया तो पुनः सीता उनके पास न जाकर पृथिवी के अंक में समा गई बड़े रमणीय एवं कारूणिक रूप से वाल्मीकि ने प्रकृति नटि के इस तथ्य को रामायण में उकेरा है जो दर्शनीय है।

वाल्मीकि ने मनुष्य की चेतना में विद्यमान सूक्ष्म विवेचन शक्ति को बुद्धि कहा है –

सूक्ष्म बुद्धि र्विचारय[5]

तर्क–वितर्क को बुद्धि का विषय माना है। आदिकाव्य में बुद्धि के सभी रूपों का वर्णन मिलता है। धर्म, ज्ञान, वैराग्य और ऐश्वर्य से युक्त बुद्धि जहाँ राजा दशरथ, राम, भरत, लक्ष्मण, मारीच, वसिष्ठ, विश्वामित्र आदि ऋषि मुनियों और योगियों को अलंकृत करती है वहीं राजसिक बुद्धि का प्रमाण कैकेयी के व्यवहार और रहन–सहन में मिलता है तथा तामसिक–बुद्धि अधर्म, अज्ञान, अवैराग्य और अनैश्वर्य को प्रकट करते हुए रावण से लेकर सम्पूर्ण राक्षस–कुल को घेरे हुए है।

सांख्य में "अभिमानोऽअहंकार"[6] कहकर अहंकार को परिभाषित किया गया है। जिसका उदाहरण रावण ही नहीं वरन् सम्पूर्ण राक्षस जाति है। रावण की यह गर्वोक्ति उसके अतिशय दंभ का परिचायक है –

प्राणैः प्रियतरा सीता हर्तव्या तव संनिधौ [7]

सांख्य सम्मत सूक्ष्म शरीर को कवि ने लिंग शरीर कहा है। रामयण में सूक्ष्म शरीर की विशेष चर्चा नहीं है लेकिन जो आत्मतत्त्व है वह शरीरों में विचरण करता हुआ मोक्ष की प्राप्ति करता है। रामायण में जब श्री विष्णु के अवतारवाद की परिकल्पना की गई है तब प्रकृति में सीता के

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

प्रभाव से, ऋषि मुनियों और देवताओं के तेज से अनेक वारन, रीछ और बलवान योद्धाओं की उत्पत्ति कही गई है और अंत में सभी सरयू नदी में डुबकी लगाते हुए अपने–अपने तेज में विलीन हो जाते हैं क्योंकि सूक्षम–शरीर महाप्रलय में प्रकृति में ही लय हो जाते है।

रामायण के राम सांख्य के पुरूष है। उनमें 'पुरूष' तत्त्व के समस्त गुण विद्यमान है। पुरूषवत वह चेतन, नित्यशुद्ध–बुद्ध मुक्त स्वभाव वाले, त्रिगुणातीत, निष्क्रिय, निर्विकारी, निर्लिप्त, असंग अपरिणामी, उदासीन, मध्यस्थ, अहेतुमान, अलिंग, विभु, विवेकी, असंहत, निरवयव, अनाश्रित, स्वतंत्र अविषय, असामान्य, प्रसवधर्मा आदि हैं। फलतः वह नित्यमुक्त, शुद्ध, बुद्ध भी है। उनका बन्धन कभी हुआ ही नहीं। अतः राम एकत्व परमात्म सत्ता सांख्य के 'पुरूष' रूप 'ज्ञ' है।

रामायण जीवन मूल्यों और आदर्शो की प्रतिष्ठा के लिए यद्यपि संघर्ष का काव्य है। इसके नायक राम को तथा जानकी और लक्ष्मण आदि पात्रों को वन की पीड़ाएँ तथा साधनहीन अवस्था में भी साधन समृद्ध राक्षसों के विरूद्ध एक युद्ध झेलना पड़ता है फिर भी इस आदिकाव्य में उस दुःख और निराशा का रूप दृष्टिगोचर नहीं होता जिसको समझकर दार्शनिकों ने मोक्ष की कल्पना की है। रामायणकार ने एक साथ चतुवर्ग की चर्चा नहीं की है। वह धर्म–अर्थ काम तक ही सीमित रह गया है। तथापि धर्म और अर्थ के फल के रूप में निःश्रेयस को अवश्य प्रस्तुत किया गया है। यही निःश्रेयस वैशेषिक दर्शन में आकर मुक्ति का पर्याय बन गया है। 'इस परम गति तक पहुॅचने का पथ सत्य–पथ है। जिस पर अग्रसर होना ही सत्य का ज्ञान तत्वज्ञान है जो मिथ्यात्व को मिटाकर उदित होता है।

सांख्य दृष्टि से राम रूप पुरूष को मुक्ति दिलाने के लिए ही सीता रूपा प्रकृति, राम के समस्त कार्यो की पूर्ति के बाद पृथ्वी में समाहित हो स्वतः निवृत्त हो जाती है। तत्पश्चात् राम को पूर्वजन्मों के संस्कार वश शरीर धारण कर पृथ्वी पर अनासक्त भाव से जीवन की अवधि को पूर्ण करना पड़ता है और अन्त में इस शरीर और सूक्ष्म शरीर दोनों को त्याग कर वह अपने पूर्ण रूप (बह्मरूप) में विलीन हो जाते है।

आदिकाव्य 'रामायण' स्वयं ही एक अद्भुत, विश्व–प्रसिद्ध आर्ष ऋषि–प्रणीत, महनीय रचना है जिसमें ब्रह्म का दार्शनिक विवेचन जहॉ–तहॉ प्राप्तव्य है वैदिक ग्रन्थों के समान लौकिक साहित्य का मूल यह महाकाव्य स्वयं ही आप्तवचन की श्रेणी में आता है। प्रत्यक्ष और अनुमान प्रमाण के आधार पर ही महर्षि ने श्रीराम (ब्रह्म) के चरित का ज्ञान प्राप्त किया था। अतः इस आदिकाव्य की रचना का मूल अनुमान प्रमाण ही है। ऋषि ने प्रत्यक्ष और अनुमान आदि दार्शनिक शब्दों का अनेकशः प्रयोग किया है– ''प्रत्यक्षमिव दार्शितम्''[8] आत्मानुमात् पश्यामि मग्नस्त्वं शोकसागरे रामः[9] आदि के द्वारा कवि ने प्रत्यक्ष और अनुमान प्रमाण के बल पर ही सत्य का अवलोकन किया है। स्पष्टतः सांख्यदर्शन 'रामायण' में मुक्तावत् चमत्कृत होकर सम्पूर्ण आदिकाव्य को ज्योतित कर रहा है।

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

सन्दर्भ सूची

i. अद्भुत रामायण – महर्षिवाल्मीकि (रामकुमार राय)

ii. श्रीमद्अध्यात्मरामायण – वेदव्यास – (मुनीलाल) 4/3–23

iii. श्रीमद्अध्यात्मरामायण – वेदव्यास – (मुनीलाल) 4/3–24, 25, 26

iv. वाल्मीकिरामायण–बालकाण्ड 73–27

v. वाल्मीकिरामायण–युद्धकाण्ड 2/20

vi. सांख्यकारिका–ईश्वरकृष्ण – (डॉ0 रामकृष्ण आचार्य) 24

vii. वाल्मीकिरामायण–अरण्यकाण्ड – 40/6

viii. वाल्मीकिरामायण–बालकाण्ड सर्ग– 4/8

ix. वाल्मीकिरामायण– किष्किन्धाकाण्ड – सर्ग– 10/34

www.ijahms.com